प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा दिनांक 15 अगस्त, 1968 को लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र के नाम संदेश

हर साल हम यहां आजाद भारत की वर्षगांठ मनाने इकट्ठा होते हैं। हमारे देश ने ऊंच नीच देखा, सुख देखा, कठिनाइयां देखीं। आशा और निराशा के बीच हमारा देश फलता फूलता रहा। ये देश एक लंबे इतिहास का देश है, लेकिन नया भारत केवल 21 वर्ष का हुआ है। इस 21 वर्षों में बहुत कुछ काम हुए हैं। विकास के नये मंदिरों की रचना हुई है। सूखा देखा, बाढ़ देखा, धूप देखी, तंगी देखी। लेकिन इस सबको झेलते हुए हम आगे बढ़ते ही रहे। मैं आज भारत की जनता को बधाई देना चाहती हूं कि किस हिम्मत से उन्होंने इन सबका सामना किया है। ये हम कर पाये हैं क्योंकि हमारे महान नेताओं ने हमको मार्गदर्शन दिया। उनके त्याग के बलिदान के कारण, उनके लंबे वर्षों के काम के कारण ये भारत की ताकत भारत की जनता की शक्ति बनी है।

आज जब हम और आप यहां संग हैं तो हमें कुछ पीछे भी देखना है और कुछ आगे भी देखना है। हमारा देश एक शानदार देश है लेकिन इसको अभी बहुत दूर जाना है और अगर हम अपने नेताओं के दिखाये हुए रास्ते पर, अपने उसूलों पर डटे हुए रहेंगे तभी हम इस रास्ते को मजबूती से और तेजी से तय कर सकते हैं।

हमारी खेती में एक नयी क्रान्ति आई है, लेकिन और भी बहुत काम हुए हैं, लेकिन हमें शर्म और दुख इसका भी है कि बुद्ध, अकबर और गांधी के शानदार परंपराओं के देश में अभी भी हिंसा और दंगे हों। इतने बड़े देश में ये स्वभाविक है कि मतभेद अलग अलग गुटों में हो। लेकिन ये सब बातें बैठकर, बातचीत से ठीक हो सकती हैं। हरेक नागरिक का कर्तव्य है कि इसमें वो मदद दे, हिंसा को फैलने नहीं दे, दंगे होने नहीं दे। ये कारण क्या है कि ये थोड़े से लोग गड़बड़ी फैला सकें, जब अधिकतर जनता शान्ति प्रिय है।

इसी तरह से हमारी अल्पजाति के लोग, हमारे हरिजन और दूसरे वर्गों के लोगों पर अत्याचार हुए हैं, जानें गयी हैं देश के साधन नष्ट हुए हैं और इस सबसे देश की शक्ति भी कम हुई है। ये बड़ी चीजें हैं। लेकिन कुछ ऐसी छोटी बातें भी होती हैं जैसे आपस में शक फैलाना। जो अंदर ही अंदर समाज के घुन जैसे काट लेती है, नष्ट करती है, समाज को अंदर से इससे भी देश कमजोर होता है। तो आज हम सबको यह निर्णय करना है कि ऐसी बातों को हम बरदाश्त नहीं करेंगे। इसमें सरकार का कर्तव्य जरूर है, लेकिन उतना ही कर्तव्य राजनीतिक दलों का है, समाजिक संस्थाओं का है और सारे हमारे बड़े और छोटे नागरिकों का है। इन्हीं बातों पर विचार करने के लिए राष्ट्रीय एकता परिषद् का गठन फिर से हुआ और उसमें कई निर्णय लिए गये जिनपर ठोस कदम उठाये जा रहे हैं और हमको आशा है कि इस संगठन के द्वारा हम एक नई शांति की भावना सारे देश में फैला सकेंगे।

शांति देश की, विकास की बुनियाद है। हमने इन 21 वर्षों में देश की इस बुनियाद को, इस नींव को पक्का किया है। हम आसते आसते अब अपने पैरों पर खड़े हो रहे हैं। एक सदियों का पिछड़ा हुआ गरीब देश आसते आसते अपना रास्ता ढूंढ रहा है, आसते आसते अपने पर भरोसा करना सीख रहा है। हमारी खेती में अबके बहुत अच्छी फसलें हुईं, लेकिन साथ ही साथ देश के कुछ हिस्सों में सूखा अभी भी पड़ा है और कुछ हिस्सों में भयानक बाढ़ आया। वो सब जितनी जनता है जिन्होंने इसके कारण कष्ट उठाया उनके साथ हमारी सहानुभूति है और हम पूरी काशिश कर रहे हैं उनकी किसी तरह से मदद हो। जो अच्छी फसल आई वो कोई जादू के कारण नहीं और न ही केवल इस कारण कि वर्षा अच्छी हुई थी वो अच्छी फसल आई क्योंकि एक कार्यक्रम बना, घनी खेती का कार्यक्रम। साधन हमारे किसान भाइयों को मिले और उन्होंने उन साधनों का, अच्छे बीजों का और सब साधनों का अच्छा उपयोग किया तो हमारी पैदावार बढ़ी।

ये एक किस्म की क्रांति है और इस क्रांति में भारत सरकार को बहुत दिलचस्पी है क्योंकि हम जानते हैं इस क्रांति से हमारी वो बुनियाद और मजबूत बनेगी और उस बुनियाद पर हम आगे बढ़ सकेंगे, अपने उद्योग और दूसरे काम भी और तेजी से आगे बढ़ा सकेंगे। लेकिन इसके साथ कुछ समस्यायें भी बढ़ी हैं। मुझे मालुम है कि इन साधनों का नये खेती के साधनों का उपयोग केवल वो किसान कर सके हैं जिनके पास सिंचाई का प्रबंध पहले से था और हमें खुशी है कि उनकी आमदनी बढ़ी, हमको खुशी है कि उत्पादन बढ़ा जिससे हमें बाहर से अनाज कम मंगाना पड़ा। लेकिन साथ ही साथ वो किसान जो हैं जिनकी संख्या अधिक है, जिनके पास सिंचाई नहीं है और इन साधनों का उपयोग नहीं कर सकते उनको लाभ नहीं पहुंच सका। और इन दोनों सिंचाई वाले किसान और सूखी खेती वाले किसानों के बीच का अंतर और बढ़ा। इससे हमको दुख है और हमको पूरा इस समय पूरी कोशिश करनी चाहिए कि जो सूखे खेती वाले हैं, कैसे उनके पास जल्दी से जल्दी सिंचाई और साधन पहुंचायें। जिसमें वो उत्पादन बढ़ा सकें, देश को मजबूत बनाने में, देश को अनाज देने के काम में वो भी भाग लें और अपने जीवन को भी वो इस तरह से सुधार सकें।

खेती के उत्पादन को हमारा उद्योग भी काफी निर्भर है और इसलिए खेती का उत्पादन अच्छा हुआ तो उससे थोड़ा फर्क हमारे उद्योग में भी आया है और हमें आशा है कि हम उस दिशा में भी अब आगे बढ़ेंगे। पिछले साल मैंने आपसे कहा था कि अंधेरी रात के बाद प्रभात जरूर आता है और ऐसा ही हुआ। अंधेरे में से अब हम निकल रहे हैं। हमारी सब समस्यायें ठीक नहीं है, लेकिन हमें उजाला दिख रहा है और अगर हम उसकी तरफ मजबूती से बढ़ते रहें तो एक नया जीवन अपनी जनता के लिए जल्दी से बना सकेंगे।

जैसे जैसे हम बढ़ते हैं, वैसे वैसे नई मांगे भी खड़ी होती हैं। आजकल बहुत से गुट हैं, बहुत से संगठन हैं जिन्होंने अपनी मांगें जाहिर की हैं और बहुत सी वो मांगें हैं, वो ठीक मांगे हैं। उनको पूरा करना चाहिए। लेकिन हमें ये भी सोचना है कि चाहे मजदूर या अध्यापक या दफ्तर में काम करने वाले इनके पास जो संगठन

हैं वो अपनी आवाज जोरों से हम तक पहुंचा सकते हैं। लेकिन हमारी लाखों करोड़ों जनता है जो उनसे भी ज्यादा गरीब है, जो न पढ़ी लिखी है, न विशेष काम सीखा है उनकी आवाज कौन उठायेगा। तो जब हम कोई भी आवाज सुनें, हमको इन दूसरों की तरफ भी ध्यान देना है और उनकी आवाज चाहे धीमी हो, चाहे संगठित रूप से हमारे पास नहीं पहुंच सके तब भी हमारे कान इतने तेज होने चाहिए कि उनकी आवाज को उनकी मांगों की तरफ भी हमारा ध्यान उतना ही जाये और इसीलिए कभी कभी ठीक मांग भी हमारे पास आती है तो हमको यही सोचना है कि वो मांग पूरा अगर हम करें तो उसको अंत में असर क्या होगा। क्या उससे हमारी आर्थिक स्थिति और अच्छी होगी या क्योंकि हमारे पास साधन कम हैं वो स्थिति कुछ डामाडोल होगी और उससे अंत में सभी को नुकसान होगा। ये बात हमको सोचनी है। इसलिए मेरा अनुरोध है अपने भाइयों से चाहे वो मजदूर हों, चाहे वो अध्यापक हों, चाहे किसी भी वर्ग के हों कि इस वक्त इन अपनी सब मांगों को वो देश के नक्शे में रखकर देखें। उनको तकलीफें हैं और उनकी तकलीफों को हम जानते भी हैं और हमारी सहानुभूति है। लेकिन वो जरा उसका मुकाबला करें जो और देश के गरीबों की तकलीफें हैं। लेकिन अगर मैं अपने मजदूर भाइयों से अनुशासन की बात करती हूं तो साथ ही साथ जो हमारे उद्योगपति हैं या हमारे और धनी कारोबार चलाने वाले हैं उनसे भी कुछ अनुरोध करना होता है, अगर वो चाहते हैं कि ये अनुशासन हो तो उनकी की भी कुछ जिम्मेदारी है। उनकी जिम्मेदारी है कि बड़े बड़े मुनासे, ऊंचे ऊंचे वेतन अगर वो बढ़ाते जायेंगे तो ये अनुशासन रखना फिर आसान नहीं रह जाएगा। उनकी जिम्मेदारी है कि वो भी इन सब मसलों पर गौर करें और मिल जुलकर कोई रास्ता निकालें जिससे जो हमारे देश में अमीर और गरीब के बीच में अंतर है वो अगर हट न सके तो कम से कम उसको हम कम कर सकें।

सारी दुनिया में एक बेचैनी है। एक लोग पहले दफे समझ रहे हैं कि वो उनकी ताकत क्या है कि वो क्या कर सकते हैं कि देश कितना निर्भर है उन पर। चाहे किसान भाई हों, चाहे मजदूर भाई हों, चाहे दूसरे गुट हों। तो इस हालत में अगर देश में शांति रखनी है, देश को बढ़ाना है तो मिल जुलकर रास्ते हम सबको निकालने हैं और ऐसे रास्ते निकालने हैं जिसमें हम निजी लाभ का नहीं सोचें, बल्कि उत्पादन कैसे बढ़ सकता है। उसमें अगर थोड़ा सा त्याग करना हो, मुनाफा कम करना हो या उस मुनाफे को बजाय अपने रखने के लिए किस तरह से हम देश के काम में फिर से डाल सकते हैं। ये सब हमको सोचना है। अगर ये जिम्मेदारी सब वर्गों की तरफ से आये तो मुझे पूरी तरह विश्वास है कि अनुशासन भी बढ़ेगा और हम अपने मजदूरों को, मैनेजरों को और अन्य लोग जो काम ऐसे करते हैं, कारखानों में उनको उनकी जिम्मेदारी और बढ़ा सकेंगे। लेकिन इस सब ने हरेक की जिम्मेदारी है, हरेक को सोचना है कि उसके करने से दूसरे पर क्या असर होता है। हमें कोई एक गुट कहे कि हम उत्पादन बढ़ायेंगे, हमें मदद करो। लेकिन हम दूसरे वर्गों की मदद नहीं करेंगे तो ये कितनी भी अच्छी बात हो ये करना संभव नहीं है। खासतौर से हमारे जैसे देश जहां इतनी भयानक गरीबी है

और जहां राष्ट्र हित के लिए और न्याय के दृष्टिकोण से भी इस अंतर को हमें कम करना है।

हमारी यहां पढ़े लिखे नौजवान इंजीनियर और दूसरों की बेरोजगारी का प्रश्न है और उसके तरफ भी हमारा ध्यान है। छोटे मोटे कार्यक्रम आगे बढ़ सकते हैं लेकिन मुख्य बात उसकी भी यही है कि किस तरह से पैदावार बढ़े, किस तरह से और कारखाने बढ़ें जिनमें और नौकरियां आयें और इन सबकी तकलीफें दूर हों। साथ ही साथ उनसे भी मैं एक प्रार्थना करूंगी और वो ये है कि वो केवल ऐसी सरकारी नौकरी या ऐसी नौकरी के पीछे नहीं लगे रहें बल्कि अपने लिए नये मौके ढूंढने की कोशिश करें।

आजकल की दुनिया में और भारत में भी, चाहे भारत में उतने मौके नहीं हों, जितने विकसित देश हैं, तभी भी बहुत से मौके हैं जो स्वयं नौजवान पैदा कर सकते हैं। हो सकता है उसमें कुछ तो सफलता नहीं मिले। लेकिन वो एक नया रास्ता खोलेंगे जिसमें सभी नौजवानों के लिए आगे बढ़ने का मौका मिलेगा। तो उनको भी देखना है कि अब अपने पर निर्भर होकर कैसे वो नये काम बना सकते हैं।

ये सार्वजनिक क्षेत्र यानी पब्लिक सैक्टर में अरबों रूपया लगाया गया है। ये पूंजीपतियों की या उद्योगपतियों की पूंजी नहीं है। ये हमारी और आपकी सारे भारत की पूंजी है और इसमें जो मुनाफा होता है ये किसी एक की जेब में नहीं जाता है, बल्कि भारत की जनता की सोददेश्य के लिए चाहे वो सड़क हो, चाहे स्कूल हो, चाहे अस्पताल हो, ये सब बनाने में ये धन लगता है। तो इनको भी कामयाब करने के लिए ये जो कारखाने या प्रोजेक्ट हैं इनमें मुनाफा बने, इसमें से हम सबका, हम सबकी दिलचस्पी होनी चाहिए। हम सब इसमें साझेदार हैं। नफा, मुनाफा हो कि न हो ये हम सबको छूता है। तो इसमें भी एक बड़ा भारी प्रयत्न करना है मजदूरों को, मैनेजरों को और सबों को कि किस तरह से इनको भी अच्छी खूब तरह से हम चला सकें। जिसमें इनका लाभ सारे देश को मिले।

ये देश मेरे कहने के मतलब नहीं है कि ये जो पब्लिक सैक्टर प्रोजेक्ट हैं ये सब, इनमें सबमें बुराई है। बहुत से अच्छे चल रहे हैं लेकिन बहुत सी कमियां भी हैं और आपको मालुम है कि हमने आपसे कमियों को कभी छुपाने की कोशिश नहीं करी। हम हमेशा ये मानते हैं कि सब बातें जनता के सामने रखनी चाहिए और उससे हमें मदद भी मिलेगी और हमारी भी कोशिश बढ़ेगी, उन जो चीज खराब है उसको फिर से ठीक करने में। जो भी उन्नति देश में हो किसी भी दिशा में वो तब हो सकती है जब देश में एकता हो, शांति हो, अच्छी आर्थिक स्थिति हो और राजनीतिक स्थिरता हो।

इन पिछले वर्षों में हमने कुछ राजनैतिक उथल-पुथल देखा। कुछ ऐसी आवाज भी उठाई गयी हमारे देश में और दूसरे देशों में कि शायद प्रजातंत्र खतरे में है। लेकिन आपने देखा कि दृष्य चाहे कितना ही बदले लेकिन प्रजातंत्र को धक्का नहीं लगा और न मैं मानती हूं कि कभी भी लगेगा। हमारी जनता अपने अधिकारों को खूब अच्छी तरह से जानती है और मैं मानती हूं कि हमेशा वो उन अधिकारों का

अच्छा उपयोग करेगी, इस तरह का उपयोग करेगी कि देश मजबूत होता जाय और प्रजातंत्र भी मजबूत हो।

देश में जो भी हम करें वो उसको असर अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में हो रहा है, उसका असर भी देश में पड़ता है। आज कल की दुनिया एक बदलती दुनिया है, वैसे तो दुनिया हमेशा बदलती है, लेकिन आजकल कुछ तेजी से बदल रही है। सभी देश इस कोशिश में हैं कि दूसरों से संबंध रखें, दूसरों से दोस्ती रखें और कुछ आपसी मतभेद भी हो तभी भी संबंध न तोड़ें और साथ ही साथ दोस्ती कितनी भी हो तो ये भी कुछ कोशिश है लोगों की कि दूसरों के झगड़ों में उलझें नहीं। भारत की नीति शुरू से ये रही कि हम किसी गुट में न कूदें। हम भारत का हित किस तरफ है, न्याय किस तरफ है वो देखकर अपने निर्णय स्वयं करें। आज हम देखते हैं कि दुनियां के दूसरे लोग भी इसी रास्ते पर आने की कोशिश में हैं और जो पहले के गुट बने थे वो फिर अब कमजोर पड़े हैं।

इधर हाल में रूस में जो पाकिस्तान को हथियार बेचने का निर्णय किया उससे हमको दुख हुआ। हम मानते हैं कि उनका ये निर्णय ठीक नहीं था। लेकिन इससे हमको घबराना नहीं चाहिए। हम दुनिया को एक घबराये हुए देश या शिकायती देश या असंतोष देश की तस्वीर रखना नहीं चाहते हैं। ये देश मजबूत देश है और इन पिछले सालों में कई ऐसे प्रबंध हुए हैं जो इसको और मजबूत बनायें हरेक क्षेत्र में। हमारी सेना आज मजबूती से और बहादुरी से सीमाओं पर डटी हुई है। तो इसलिए दुनिया वाले चाहे कुछ करें हमको अपनी ताकत में भरोसा रखना है और आजकल के जमाने में खासतौर से ताकत खाली सेना की, फौजों की नहीं होती है वो उद्योग की ताकत होती है, समाज की ताकत होती है। तो इन सबमें हमको भरोसा रखना है। एक सवाल ये भी उठता है कि क्या हम किसी देश के कहने से दब रहे हैं या दबेंगे। मैं बहुत जोरों से कहना चाहती हूं कि इसका कोई सवाल नहीं है कि हम पर कोई दबाव डाले। वो कभी नहीं दबते हैं जिनका संकल्प दृढ़ होता है और हमारा संकल्प दृढ़ है।

हम पाकिस्तान से हमारा झगड़ा कुछ रहा, शायद हम पास के हैं, शायद हमारे बहुत से रिश्ते रहे इसलिए वो झगड़ा शायद और बढ़ा जैसे भाइयों का कभी होता है। हमारे ऊपर हमले भी हुए और हम देखते हैं कि प्रचार के द्वारा और तरीकों से हरदम वो एक हमारे खिलाफ माहौल सा बनाने की कोशिश में रहते हैं। लेकिन ये सब होते हुए भी पंडित जी ने और शास्त्री जी ने उनके सामने एक लड़ाई न करने की यानी 'नो वॉर पैक्ट' का सुझाव पेश किया था। आज मैं फिर से उनसे यही कहूंगी कि इसपर वो पुन: विचार करें क्योंकि यही एक रास्ता है जिससे दोनों ही देशों का हित, जिसमें दोनों देशों का हित है और जो दोनों देशों को मौका देगा कि अपने अंदरूनी प्रश्नों का सामना करके अपने देशों को आगे बढ़ायें और मजबूत करें।

ये स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा कि जो भारत में जन्म लेता है वो धन्य होता है। ये भी सच है कि ये भारत धन्य है कि इसमें इतने महापुरूषों ने जन्म लिया। एक ऐसे महापुरूष थे महात्मा गांधी इसी साल अक्टूबर से हम उनकी

शताब्दी मनाने जा रहे हैं। गांधी जी के ऊंचे आदर्श और उसूल ऐसे थे कि वो उनके जीवन में माने रखते थे, आज भी माने रखते हैं और आते हुए युगों के लिए भी माने रखेंगे। गांधी जी ने गरीबों के लिए, हरिजनों के लिए, पिछड़ी जातियों के लिए अपना सारा जीवन बिताया और सामाजिक एकता के लिए अपनी जान तक बलिदान कर दी। इन सबसे हमको ये सबक सीखना है कि कैसा भारत हम बनायेंगे और ये जो उनके ऊंचे उसूल थे उनको हम कैसे बढ़ायें।

ये स्वाभाविक है कि आज के दिन हमारा ध्यान भारत के नौजवानों की तरफ जाये। वो है नये भारत की रीढ़ की हडडी, ये मजबूत रहेंगे तो भारत मजबूत है, भारत का भविष्य मजबूत है। आजकल के जमाने में नौजवानों के मनों में भारत में और बहुत से देशों में बेचैनी आयी है। इसके अनेक कारण हैं। शायद एक ये भी कारण है कि नये जमाने के लिए जो पुरानी बातें थीं वो सब जबाव नये प्रश्नों को नहीं दे सकतीं। नौजवानों को हम लोग कुछ हद तक नेतृत्व दे सकते हैं, कुछ हद तक रास्ते तक पहुंचा सकते हैं। लेकिन उसके बाद उनको नया रास्ता बनाना है और भविष्य में देश को ले जाना है। उनके सामने कठिनाइयां कोई कम नहीं होंगी। ना ही उनको चाहना ही चाहिए कि कठिनाइयां कम हों, क्योंकि कठिनाई का सामना करके, चुनौतियों का सामना करके ही समाज मजबूत और बलवान बनते हैं। उनके सामने पहाड़ खड़े होंगे, लेकिन वो पहाड़ों का सामना किस तरह करेंगे। क्या उसके आगे बैठ जायेंगे और अपनी परेशानी जाहिर करेंगे या उस पहाड़ पर चढ़ेंगे। मैं उनसे कहना चाहती हूं उनके सामने दो ही तरीके हैं या वो पहाड़ पर चढ़ें और या वो पहाड़ को चीर कर आगे बढ़ें। तीसरा कोई रास्ता नहीं है।

भारत के नौजवानों पर हमारी बहुत बड़ी आशाएं हैं। चाहे वो विज्ञान का काम करें, चाहे वो कोई दूसरा काम करें। आज वो एक नई दिशा में देश को ले जा सकते हैं और देश को मजबूत कर सकते हैं और मेरी पूरी आशा है कि इसमें वो लगेंगे और इसमें जो उनकी बेचैनी है उसको तोड़-फोड़ में नहीं लगायेंगे। ऐसे कामों में नहीं पड़ेंगे जिससे उनका भी नुकसान हो और देश का भी नुकासान हो। बल्कि उस शक्ति को, उस इच्छा को ऐसे जोड़ेंगे कि उससे सारी जनता को उत्साह मिले और जैसे मैंने कहा हम अपने देश को तेजी से आगे बढ़ा सकें।

मेरे भाइयों और बहनों, हममें से कुछ हैं जो कारखानों में काम करते हैं। कुछ हैं जो खेती में काम करते हैं, कुछ घरों में काम करते हैं या दफ्तरों में, कुछ सड़कों पर काम करते हैं। हमारी हरेक की समस्या अलग है, हरेक की कठिनाई अलग तरह की है। लेकिन हम सबका ध्येय, हम सबकी भलाई एक ही चीज में है, वो है भारत का उज्जवल भविष्य। इसलिए ये समय है जब हम और सब कठिनाइयों को भूलकर एक होकर यही देखें कि भारत को किस दिशा में ले जाना है, भारत को कैसे मजबूत करना है। भारत के सामने जो संकट हैं हमारे व्यक्तिगत संकट नहीं, गुट के संकट नहीं, दल के संकट नहीं, बल्कि सारे देश के जो संकट हैं उनको मिलकर हम कैसे सामना उनका करें। ये चाहे हमारी कोई भी उमर हो और हम कहीं भी रहते हो- मैदान में, पहाड़ में, सीमा पर, समुद्र के किनारे हम सबको आज यही सोचना है कि हम भारत के नागरिक हैं और हम कोई काम ऐसा नहीं

करेंगे जिससे की किसी तरह से भारत का सिर नीचा हो। हमको ऐसी जीना है कि आते युग हमारी तरफ देखकर कहें कि ये आजाद भारत की पीढ़ी थी जिसने भारत की संस्कृति को, भारत के भविष्य को एक नया मौड़ दिया, भारत की बुनियाद ऐसी बनाई कि आते हुए लोगों के युगों के जीवन सुखमय हो, आराम का हो और एक तरह का हो कि हरेक काम से देश और मजबूत हो।

तो मेरी आज के इस हमारे देश की वर्षगांठ के दिन मैं आप सबको बधाई देती हूं। किसानों को बधाई देती हूं उन्होंने जो अपनी मेहनत से और याद रखिएगा ये मेहनत उन्होंने सूखे के जमाने में करके दिखाया, अच्छे दिनों के लिए तैयारी कष्ट के जमाने में की और उत्पादन बढ़ा के हमारी कुछ समस्या हल की। मजदूरों को बधाई देती हूं कि वो उत्पादन बढ़ाने में कारखानों में काम करके देश की मदद कर रहे हैं। दूसरे कितने हैं जो उत्पादन बढ़ाने के काम में लगे हैं, उनको बधाई देती हूं और सारी जनता को भी मैं फिर से बधाई देती हूं कि कठिनाइयों का सामना उन्होंने सदा हिम्मत से किया और आज भी हिम्मत से करेंगे और अपनी हिम्मत से वो सारे देश में और हिम्मत बढ़ायेंगे। चाहे लोग दूर हों, चाहे पास हों। राजधानी के लिए सब जनता बराबर की होती है और उसकी यही चेष्टा होनी चाहिए कि उसकी सदभावना, सहानुभूति और मदद हरेक तक जिसको भी जरूरत है उस तक हम पहुंचा सकें। इस काम में भारत की जनता की सहायता मैं मांगती हूं और मुझे पूरा विश्वास है कि शानदार देश को, इस प्राचीन देश को, एक नवीन रूप हम देकर बहुत ऊंचा उठायेंगे और इसको चमकायेंगे। मैंने गांधी जी का नाम लिया। गांधी जी हमारे मान, सम्मान की उनको जरूरत नहीं है, उनका जो काम है वो सदा के लिए उसमें इतिहास में छाप डाला है। उनका नाम है वो सदा के लिए दुनिया में चमकेगा। लेकिन उनकी अगर याद हम करते हैं तो इसलिए कि उनकी आत्मा और उनके उसूल हम सबको बल दें, हम सबको ऊंचा उठायें और यही आज मेरी आज प्रार्थना है कि वो हमको ये शक्ति दें कि उनके सपने को हम पूरा कर सकें। अपने गरीबों के जीवन में सुख ला सकें और अपने देश को दुनिया में चमका सकें। आज के दिन इस लाल किले पर खड़े होकर दो नाम और विशेष याद आते हैं क्योंकि उनका लाल किले से कुछ संबंध था और जो हम नारा बोलने वाले हैं उससे भी संबंध था। नेता जी सुभाष बोस ने लाल किले पर चढ़ने का नारा आजाद हिंद फौज को दिया था और जय हिंद का नारा भी उन्होंने भारत को दिया और फिर पंडित जी ने इस नारे को देश के कौने कौने तक फैलाया जिसने आज ये हमारी एकता और मजबूती का चिन्ह हो गया है। मैं इस नारे को बोलूंगी और आप सब मेरे साथ मिलकर तीन बार मेरे पीछे जय हिंद बोलिएगा।

जय हिंद (जन समूह.....जय हिंद),
जय हिंद (जन समूह.....जय हिंद),
जय हिंद (जन समूह.....जय हिंद)।